देखा ना बीर हनुमान जैसा.....!!

तीरथ ना देखा प्रयाग जैसा, नाग नहीं कोई शेषनाग जैसा
चिन्ह नहीं कोई सुहाग जैसा, तेज नहीं कोई भी आग जैसा,
जल नहीं कोई गंगाजल जैसा, फूल नहीं कोई कमल जैसा
विषेला ना कोई करेले जैसा, आज नहीं दिन देखा कल जैसा
जान लिया मान लिया सबको पहिचान लिया
चन्दा भी देखा और तारे भी देखे, देखा बड़ा आसमान ऐसा
माली भी देखा सुमाली भी देखा, पर देखा ना बीर हनुमान जैसा
पर देखा ना बीर हनुमान जैसा.....

पूरब से सूरज निकलता, नभ लालीमा से लज्जाये,
लाल जोड़े में जैसे दुल्हनिया, घूंघट में शरमाए
अवतारी नहीं कोई राम जैसा, पित्र भक्त नहीं परसुराम जैसा
छलिया नहीं घनश्याम जैसा, धाम नहीं विष्णु के धाम जैसा
जान लिया मान लिया सबको पहिचान लिया
रावण भी देखा अहिरावण भी देखा, पर दानी करण ना महान जैसा
धर्मी भी देखे अधर्मी भी देखे, पर देखा न बीर हनुमान जैसा
पर देखा ना बीर हनुमान जैसा.....

चक्र सुदर्शन को दबाकर, मान तरुण का घटाया
युद्ध किया शंकर से भारी, राम से राड़ मचाया
व्रत नहीं कोई निराहार जैसा, प्यार नहीं माता के प्यार जैसा,
शस्त्र नहीं कोई तलवार जैसा, पुत्र नहीं श्रवणकुमार जैसा
जान लिया मान लिया सबको पहिचान लिया
पण्डे भी देखे इनके झंडे भी देखे, झंडो पे देखा निशान ऐसा,
अपने भी देखे पराये भी देखे, पर देखा न बीर हनुमान जैसा
पर देखा ना बीर हनुमान जैसा.....

है ग्यारवे रूद्र बजरंग, जब जन्म पृथ्वी पे पाया
बाली अवस्था में रवि को , फल समझकर खाया
नारा नहीं सत्यमेव जैसा, देव नहीं कोई महादेव जैसा,
धर्म नहीं कोई कृष्ण धर्म जैसा, कर्म नहीं कोई सत्कर्म जैसा
जान लिया मान लिया सबको पहिचान लिया
स्वर भी देखे स्वरवाले भी देखे, पर स्वर ना कोयल की तान जैसा
अच्छे भी देखे मव्वाली भी देखे, देखा न बीर हनुमान जैसा
पर देखा ना बीर हनुमान जैसा.....